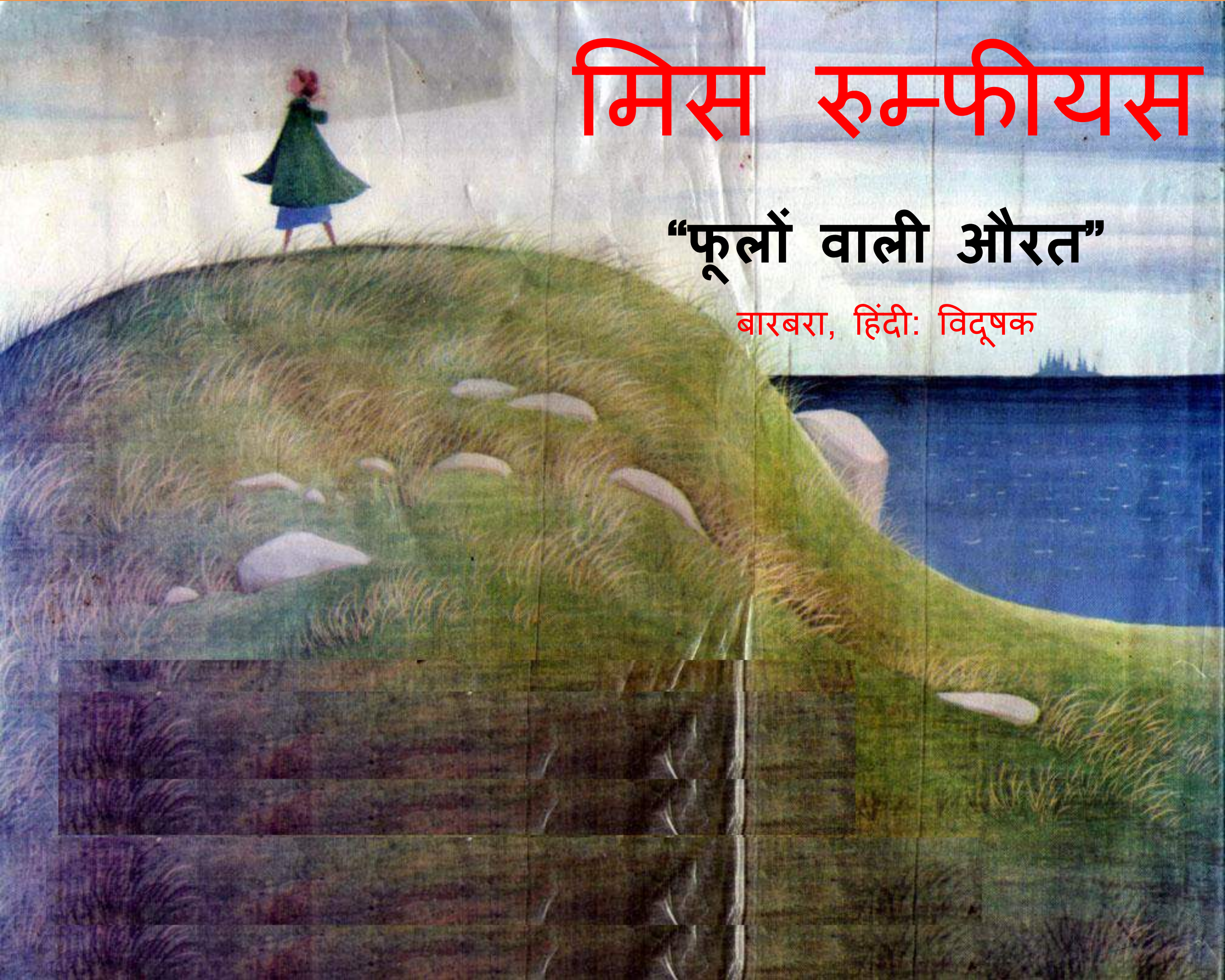


मिस रुम्फीयस

“फूलों वाली औरत”

बारबरा, हिंदी: विदूषक



मिस रुम्फीयस – फूलों वाली औरतों

(अनेकों पुरुस्कारों से सम्मानित पुस्तक)

कभी, सालों पहले ऐलिस नाम की एक लड़की थी. वो एक शहर में समुद्र के किनारे रहती थी. जब वो बड़ी हुई तब उसकी इच्छा बहुत से दूर-दराज़ के देशों की यात्रा करने की हुई. बाद में वो अपने दादाजी जैसे ही, समुद्र के किनारे एक घर में रहना चाहती थी. पर उसे एक काम और करना था.

“वो क्या?” उसने दादाजी से पूछा.

“इस दुनिया को सुन्दर बनाने के लिए तुम कुछ ज़रूर करना,” दादाजी ने उससे कहा.

ऐलिस बड़े होकर मिस रुम्फीयस बनीं. उन्होंने अपने वादे को निभाया. वो पूरी दुनिया घूमीं. फिर वो अपने शहर में लौटीं और समुद्र के किनारे एक घर में रहीं. अब मिस रुम्फीयस काफी खुश थीं.

पर अभी भी उन्हें, एक काम करना बाकी था.

बारबरा कूनी ने, 100 से ज्यादा बच्चों की किताबों के लिए चित्र बनाये हैं. उनमें से दो **कैलडीकोट पुरुस्कार** से सम्मानित हैं. इस बेहद सरल और सुन्दर किताब को उन्होंने अपने दिल से लिखा है और बड़ी कल्पनाशीलता से उसके चित्र बनाये हैं. इसमें उन्होंने एक आर्टिस्ट की ज़िन्दगी और उसकी विरासत को अमर किया है.



मिस रुम्फीयस या “फूलों वाली औरत” समुद्र के किनारे एक छोटे से घर में रहती थीं. घर एक आसपास पत्थरों के बीच नीले, बैंगनी और गुलाबी रंग के फूल खिले थे. “फूलों वाली औरत” अब छोटी और काफी बूढ़ी थी, पर वो हमेशा ऐसी नहीं थी. यह मुझे इसलिए पता है क्योंकि वो रिश्ते में मेरी परदादी थीं और उन्होंने ही मुझे यह सब कुछ बताया था.

किसी ज़माने में एक छोटी लड़की समुद्र के किनारे रहती थी. उसका नाम ऐलिस था. अपने घर से उसे समुद्र का घाट, जेटी और जहाजों के ऊंचे मस्तूल दिखाई देते थे. बहुत साल पहले उसके दादाजी एक बड़े जहाज़ में अमरीका आए थे.





CARVING AND PAINTING

EAGLE

HOTEL

25

W^M RUMPH

FISH
OYSTERS

IRON

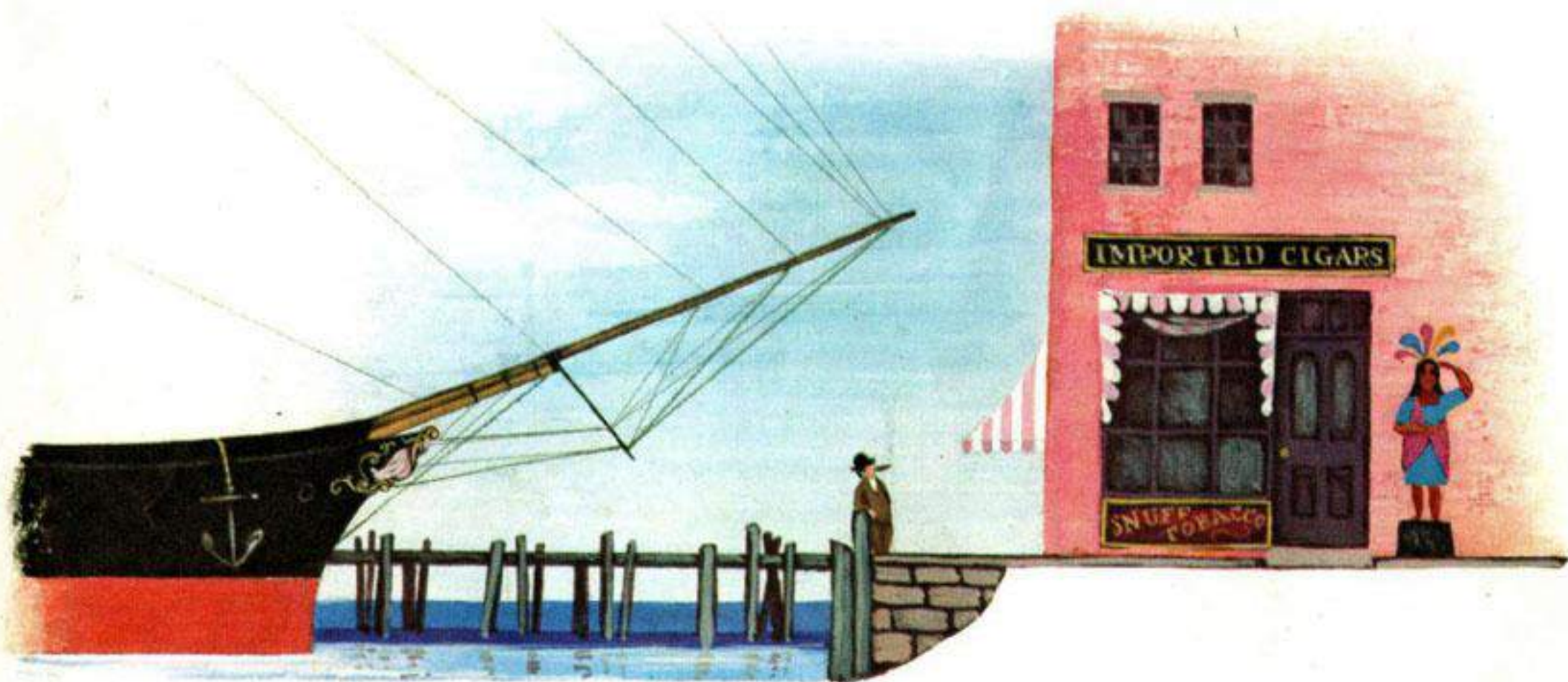
SAILMAKER

FLOUR

GRAIN

MOOTS
& DRINKS

अब दादाजी, घर के नीचे तहखाने में काम करते थे. वो नावों और जहाजों के सामने लगने वाले लकड़ी के मुखौटे बनाते थे. सिगार बेचने वाली दुकानों के सामने रखने के लिए वो इंडियंस-लोगों की शकल-सूरत की लकड़ी की मूर्तियाँ भी तराशते थे. ऐलिस के दादाजी एक आर्टिस्ट थे. वे साथ में चित्रकार भी थे और समुद्र में तैरते जहाजों के चित्र बनाते थे. जब दादाजी बहुत व्यस्त होते, तब ऐलिस चित्रों में आसमान का रंग भरती और इस तरह दादाजी की मदद करती थी.







शाम के समय ऐलिस दादाजी की गोद में बैठती और दूर-दराज़ देशों के किस्से-कहानियाँ सुनती. दादाजी की कहानी जब खत्म होती तो ऐलिस कहती, “मैं भी बड़ी होकर दूर-दूर के देशों की यात्रा करूंगी. और जब मैं बूढ़ी होऊंगी तब मैं भी समुद्र के किनारे आकर बसूँगी.”

“यह तो बहुत अच्छा होगा, ऐलिस,” दादाजी ने कहा, “पर तुम एक तीसरा काम और करना.”

“वो क्या?” ऐलिस ने पूछा.

“तुम ऐसा कोई काम ज़रूर करना जिससे दुनिया और सुन्दर बने,” दादाजी ने कहा.

“ठीक है,” ऐलिस ने कहा. पर उसे अभी यह नहीं पता था कि वो काम क्या होगा.

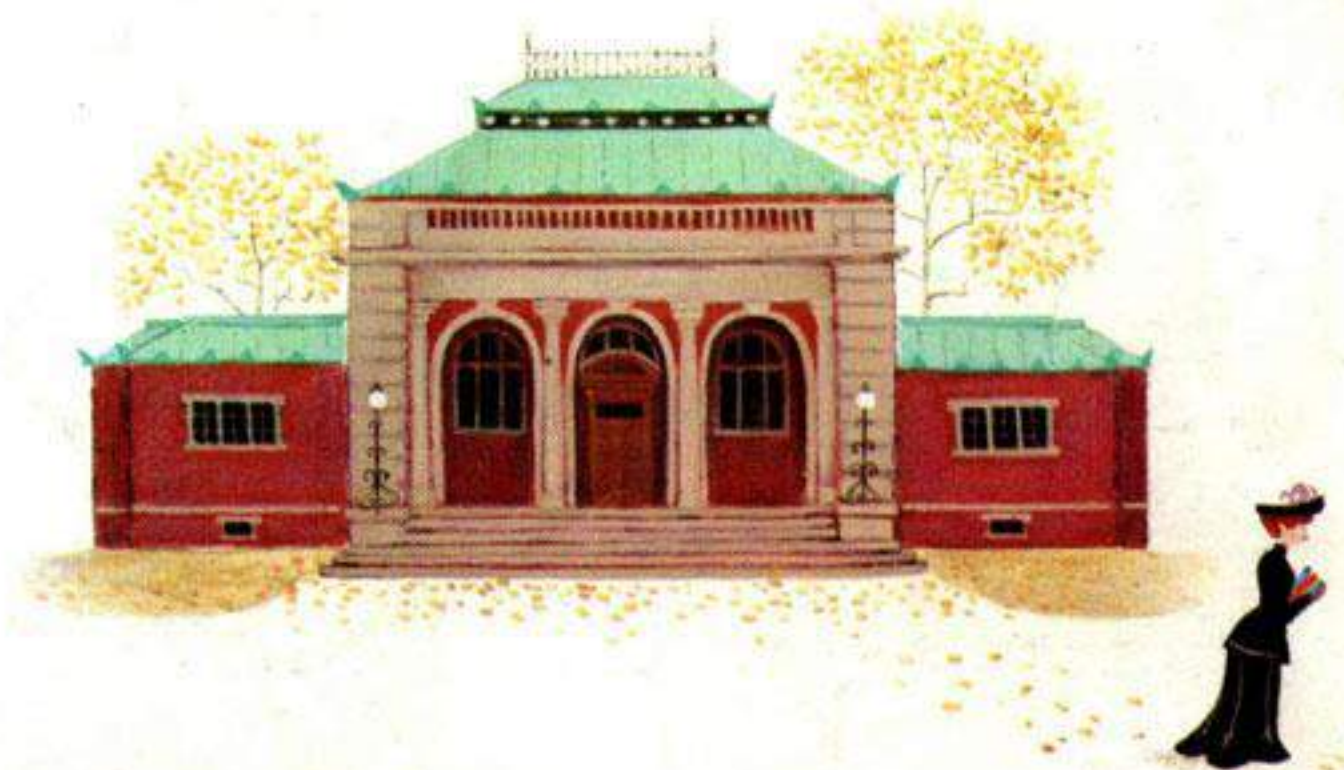
फिर ऐलिस उठी उसने अपना मुंह धोया और नाश्ते में दलिया खाया. फिर वो स्कूल गई और वहां से वापिस आकर उसने अपना होमवर्क किया.

जल्द ही ऐलिस बड़ी हो गई.



फिर मेरी परदादी ऐलिस, उन तीन बातों को करने निकलीं, जिनका उन्होंने अपने दादाजी से वादा किया था. वो घर छोड़कर एक अन्य शहर में गयीं जो समुद्र और नमकीन हवा से बहुत दूर था. वहां उन्होंने एक लाइब्रेरी में काम किया. वो किताबें साफ़ करतीं और उनके गड्ढों को विषय-अनुसार अलग-अलग सजातीं. वो किताबें ढूँढने में पाठकों की मदद भी करतीं. वो खुद भी बहुत किताबें पढ़तीं और उनसे दूर-दराज़ के देशों की जानकारी हासिल करतीं.

अब लोग उन्हें **मिस रुम्फीयस** बुलाने लगे थे.





कभी-कभी वो पार्क के बीच में स्थित कांच-घर में चली जाती थीं. कांच-घर के अन्दर सर्दियों में भी, वो नमी भरी, गर्मी महसूस करतीं और चमेली की भीनी-भीनी खुशबू सूंघतीं.

“यहाँ तो ऐसा लगता है जैसे मैं किसी गर्म देश के टापू में आ गई हूँ,” मिस रुम्फीयस कहतीं, “पर यह सच नहीं है.”





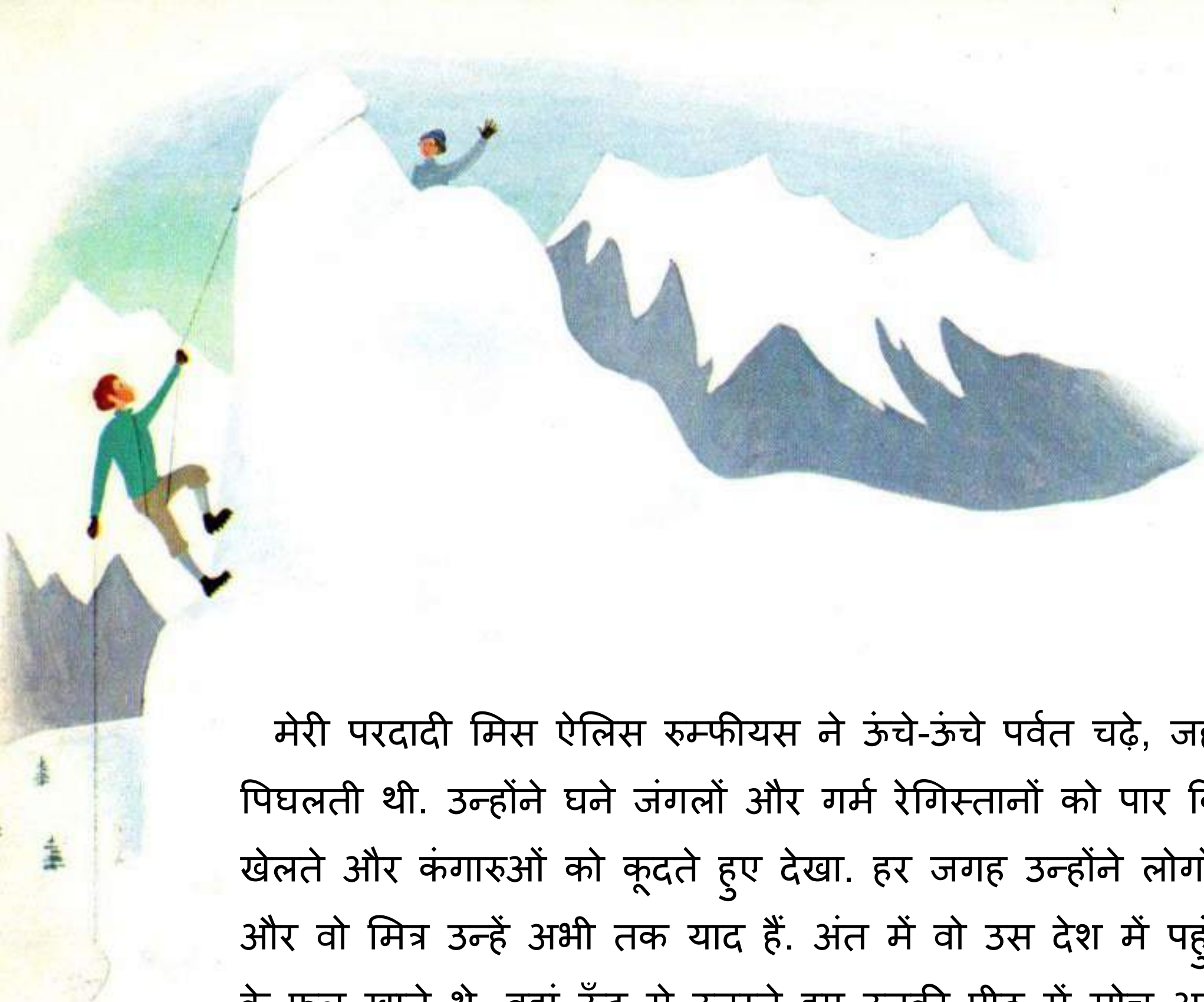
फिर मिस रुम्फीयस सचमुच के गर्म द्वीपों में गईं जहाँ लोग शौकिया तौर पर तोते और बन्दर पालते थे. वहाँ वो साफ़-सुथरे समुद्री तट पर चलीं और उन्होंने सुन्दर सीपियाँ इकट्ठी कीं. एक दिन उन्हें मछुआरों के गाँव का राजा मिला. उसका नाम था बापा राजा.

“आप धूप में बहुत थक गई होंगी,” उसने कहा, “चलिए मेरे घर, कुछ आराम करिए.”

फिर मिस रुम्फीयस, बापा राजा के घर गईं और उसकी पत्नी से मिलीं. कुछ देर बाद बापा राजा उनके लिए एक हरा नारियल लेकर आया. उसने नारियल को ऊपर से काटा जिससे मिस रुम्फीयस उसका ताज़ा और मीठा पानी पी सकें. जाने से पहले बापा राजा ने मिस रुम्फीयस को मोती का एक सीप दिया जिसपर जन्नत के पक्षी का चित्र बना था और यह शब्द लिखे थे, “तुम सदा मेरे दिल में रहोगी.”

“तुम भी सदा मेरे दिल में रहोगे,” मिस रुम्फीयस ने कहा.





मेरी परदादी मिस ऐलिस रुम्फीयस ने ऊंचे-ऊंचे पर्वत चढ़े, जहाँ बर्फ कभी नहीं पिघलती थी. उन्होंने घने जंगलों और गर्म रेगिस्तानों को पार किया. उन्होंने शेरों को खेलते और कंगारुओं को कूदते हुए देखा. हर जगह उन्होंने लोगों से दोस्ती बनाई, और वो मित्र उन्हें अभी तक याद हैं. अंत में वो उस देश में पहुंची जहाँ लोग कमल के फूल खाते थे. वहां ऊँट से उतरते हुए उनकी पीठ में मोच आ गई.

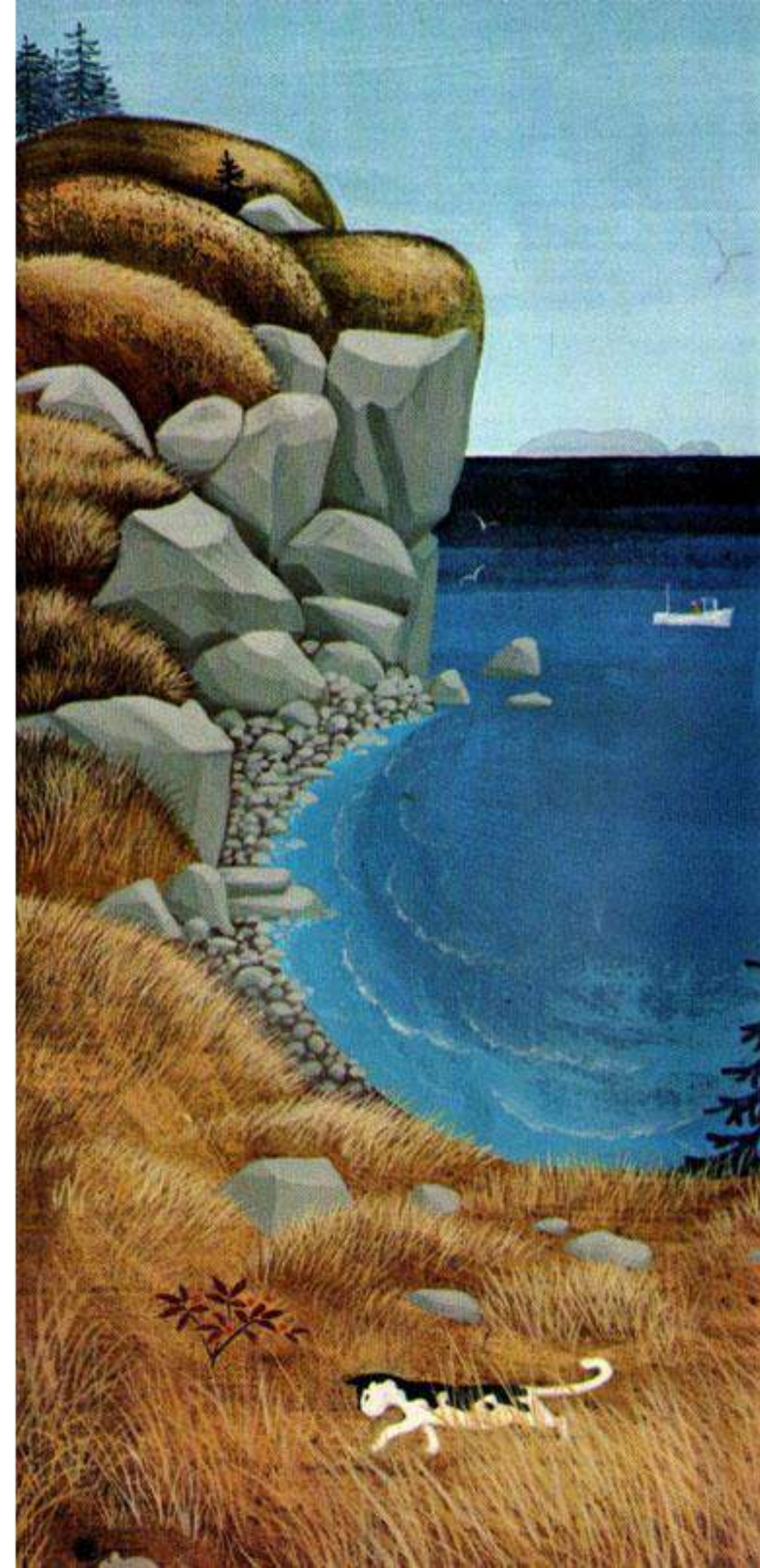
“मैंने कितनी बेवकूफी का काम किया,” मिस रुम्फीयस ने कहा. “अब मैं तमाम दूर-दराज़ के देश देख चुकी हूँ. अब समुद्र के पास घर खोजने का वक्त आ गया है.”



अपने नए घर के बरामदे से मिस रुम्फीयस, सूरज को उगते हुए देखतीं. फिर सूरज आसमान में ऊपर उठता और उसके प्रकाश से समुद्र का पानी झिलमिलाता. शाम को वो सूर्य को अपने सुन्दर रंगों में ढलते हुए देखतीं. उन्होंने अपने घर के पास के पत्थरों में एक छोटा सा बगीचा शुरू किया. उस पथरीली ज़मीन में उन्होंने कुछ रंग-बिरंगे फूलों के बीज बोए. इससे मिस रुम्फीयस को बहुत खुशी मिली.

“मुझे अभी एक काम और करना है,” उन्होंने कहा. “मुझे दुनिया को सुन्दर बनाने के लिए कुछ तो करना है.”

पर क्या करूं? “दुनिया तो पहले से ही काफी खूबसूरत है,” उन्होंने समुद्र की ओर देखते हुए सोचा.







अगले साल जब वसंत आया तब मिस रुम्फीयस की तबियत कुछ अच्छी नहीं थी. उनकी पीठ में दर्द कायम था, और वो ज़्यादातर समय पलंग पर ही आराम करती थीं.

पिछली गर्मियों में उन्होंने जो फूलों के बीज बोए थे वे पथरीली और बंजर ज़मीन के बावजूद खिल उठे थे. अपने बेडरूम की खिड़की से वो उन्हें निहार सकती थीं. वो फूल नीले, बैगनी और गुलाबी रंग के थे.

“वे सभी लूपिन के फूल थे,” मिस रुम्फीयस ने संतोष व्यक्त करते हुए कहा. “फूलों में मुझे लूपिन के फूल ही, सबसे ज्यादा पसंद हैं. काश मैं इस गर्मी के मौसम में कुछ और बीज बो पाती. फिर अगले साल और बहुत सारे फूल खिलते.”



बर्फीली सर्दी के बाद फिर दुबारा वसंत आई. अब मिस रुम्फीयस की तबियत पहले से कहीं बेहतर हो गई थी. अब पलंग पर लेटे रहने की बजाए वो दुबारा फिर से चल सकती थीं. एक शाम वो पास की पहाड़ी पर चढ़ीं. उस पहाड़ी पर वो एक लम्बे अरसे के बाद चढ़ रही थीं.

पहाड़ी की चोटी पर पहुंचकर उन्होंने खुशी से रोते हुए कहा, “मुझे अपनी आँखों पर यकीन नहीं हो रहा है!” क्योंकि उस पहाड़ी के एक बड़े टुकड़े पर नीले, बैंगनी और गुलाबी रंगों के, लूपिन फूल खिल रहे थे!

“यह सब हवा का कमाल है!” उन्होंने ज़मीन पर घुटने टिकाकर, अपनी खुशी और कृतज्ञता व्यक्त करते हुए कहा, “हवा इन बीजों को मेरे बाग़ से यहाँ तक बहाकर लाई होगी! इस काम में चिड़ियों ने भी भरपूर मदद की होगी!”

फिर मिस रुम्फीयस के दिमाग में एक बेहतरीन विचार कौंधा!



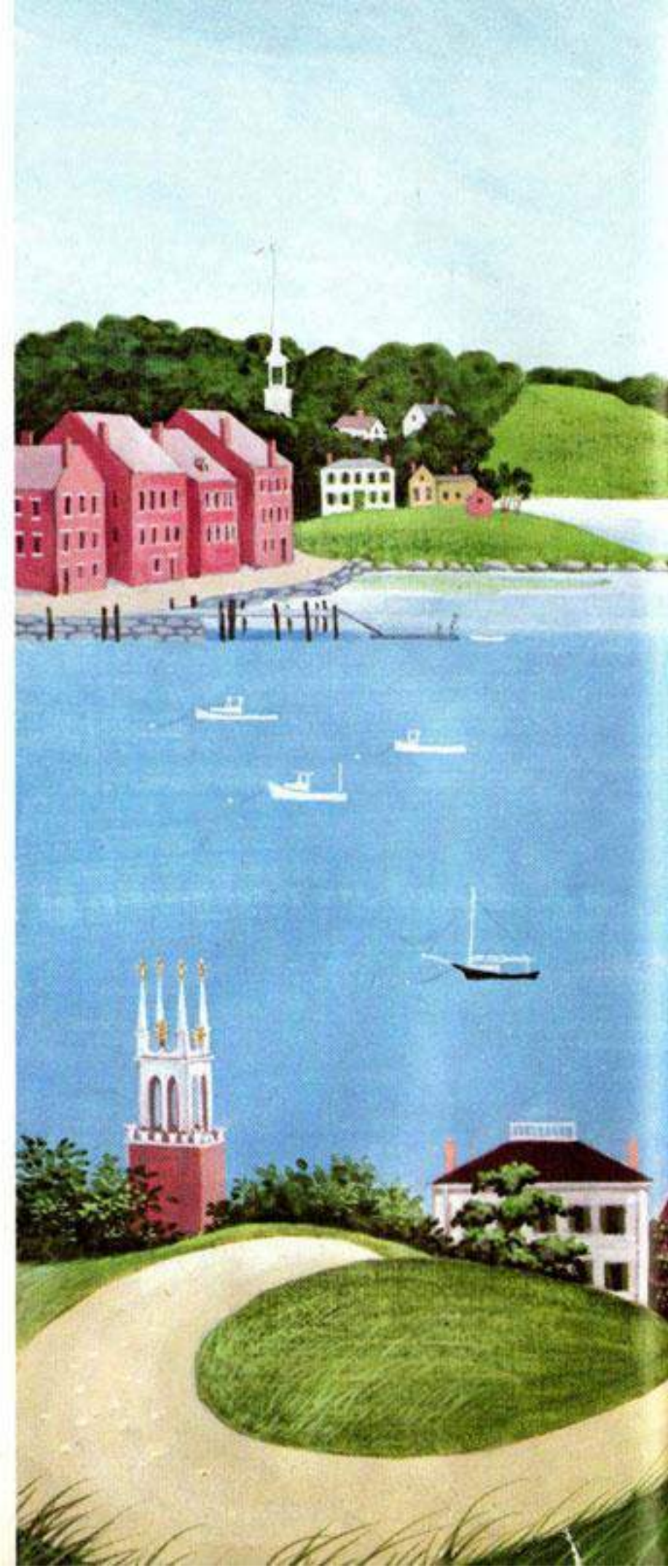


घर वापिस लौटकर उन्होंने दराज़ में से बीज विक्रेताओं की सभी सूचियाँ निकालीं. फिर उन्होंने सबसे अच्छी किस्म के 150-किलो लूपिन फूलों के बीजों का आर्डर भेजा.

फिर पूरी गर्मी भर मिस रुम्फीयस ने बस एक काम किया. अपनी जेबों में लूपिन के बीज भरे और फिर पहाड़ियों, खेतों और बंजर ज़मीन पर चलते-चलते बीजों को बिखराया. उन्होंने स्थानीय सड़कों और हाईवे के दोनों ओर भी बीज बिखराए. स्कूल के मैदान और चर्च के पीछे भी उन्होंने मुट्ठी भर-भर के बीज बिखराए. उन्होंने बीजों को पत्थर की दीवारों और गड्ढों में भी फेंका.

अब अचानक से उनकी पीठ का दर्द मालूम नहीं कहाँ रफूचक्कर हो गया था.

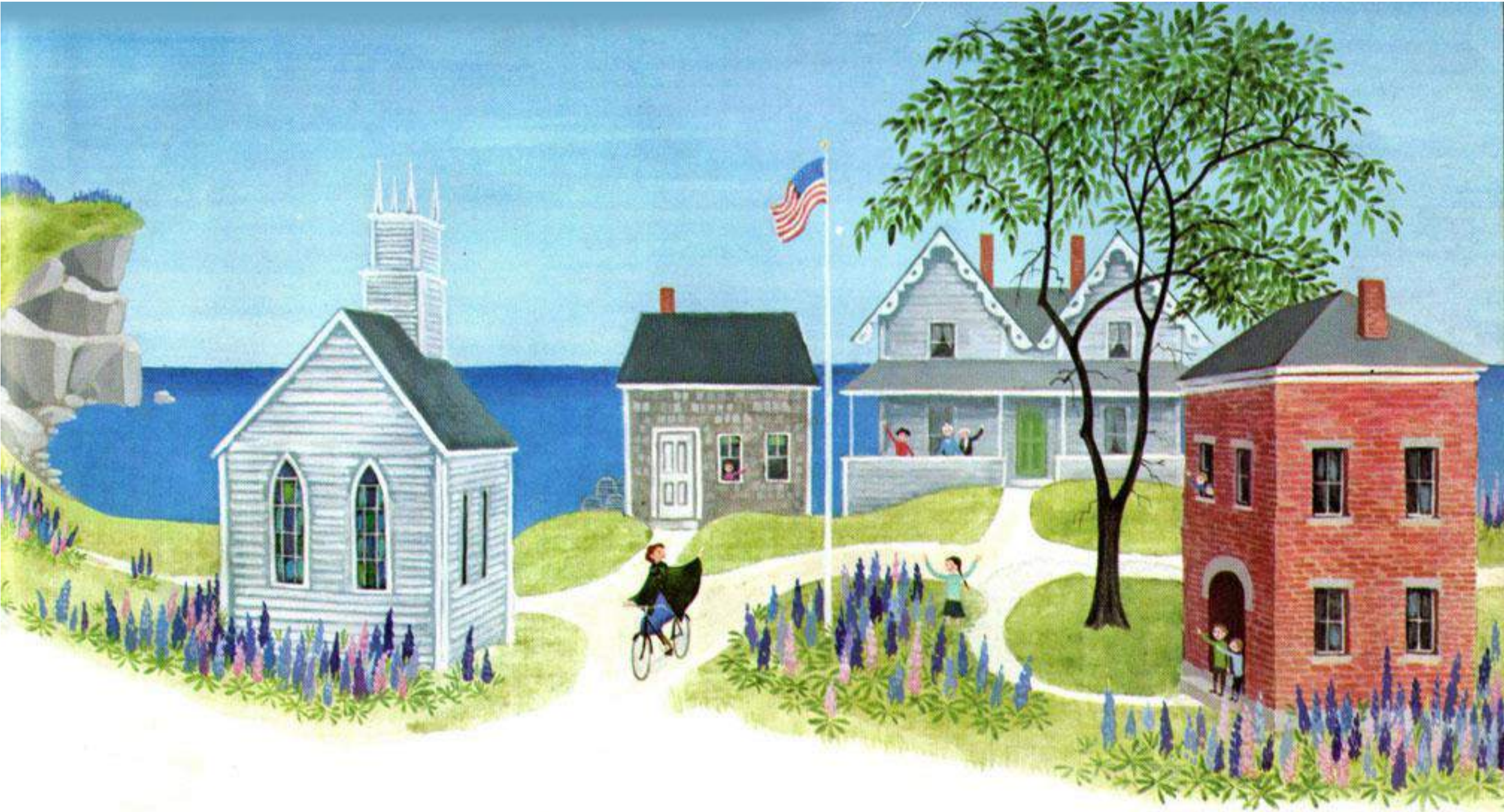
कुछ लोग अब मिस रुम्फीयस को “पागल बुढ़िया” कहकर बुलाने लगे.







अगली गर्मियों तक लूपिन के फूल सब जगह फैल चुके थे. खेतों, मैदानों, पहाड़ियों और वादियाँ में, सभी जगह नीले, बैंगनी और गुलाबी रंग के लूपिन फूल लहलहा रहे थे. सभी सड़कों और हाइवेज के किनारे-किनारे रंग-बिरंगे फूल सिर उठाकर लोगों का स्वागत कर रहे थे.



स्कूल और चर्च के पीछे इन रंगीन और दिलकश फूल का कालीन बिछा था.
अब तो पत्थरों की दीवारों में से भी यह फूल झांक कर देख रहे थे.
अब मिस रुम्फीयस का तीसरा, सबसे कठिन काम भी खत्म हुआ था.



मेरी परदादी मिस रुम्फीयस अब काफी उम्र-दराज़ हैं. उनके बाल अब पूरी तरह सफ़ेद हो चुके हैं. हर साल लूपिन फूलों की तादाद बढ़ती ही जाती है. इसलिए अब लोग मिस रुम्फीयस को **“फूलों वाली औरत”** के नाम से बुलाते हैं. कभी मेरे कुछ दोस्त मिस रुम्फीयस के गेट के सामने खड़े होते हैं. वे हजारों-लाखों लूपिन के बीज बोने वाली **“फूलों वाली औरत”** के दर्शन करने के उत्सुक होते हैं. जब मिस रुम्फीयस उन्हें घर में आमंत्रित करतीं तब यह मित्र दबे पांव अन्दर जाते हैं. वे सोचते कि मिस रुम्फीयस ज़रूर दुनिया की सबसे बूढ़ी महिला होंगी. पर अक्सर मिस रुम्फीयस मेरे मित्रों को, दुनिया के दूर-दराज़ देशों की कहानियां सुनातीं हैं.

“जब मैं बड़ी होऊँगी,” मैंने उनसे कहा, “तो मैं भी दूर-दराज़ के देशों की यात्रा करूँगी और फिर समुद्र के नज़दीक एक घर में रहूँगी.”

“यह बहुत उम्दा विचार है, छोटी ऐलिस,” मेरी परदादी ने कहा, “पर तुम एक तीसरी चीज़ और करना.”

“वो क्या?” मैंने पूछा

“ दुनिया को और सुन्दर बनाने के लिए तुम कुछ ज़रूर करना.”

“ज़रूर!” मैंने उनसे कहा.





पर मुझे अभी तक पता नहीं,
कि वो काम क्या होगा?

